कैमूर जिला के भूमि तथा जल संसाधन : एक भौगोलिक अध्ययन

जितेन्द्र कुमार सिंह

कैमूर क्षेत्र के पहाड़ी भागों में वनों को जलाकर स्थानान्तरण खेती की क्रिया से मिट्टी उर्वरता खो बैठी है। आज विश्व भर के किसान व मृदा–वैज्ञानिक मिट्टी की महत्ता का अधिक ध्यान रखते हैं, और उसको स्वस्थ्य बनाए रखने के उपायों के प्रति जागरूक हैं। अनेक क्षेत्रों में मिट्टी को भूमि–उपयोग व फसली–प्रारूपों के अनुकूल बनाने के मानव–प्रयास तीव्र हुए हैं। बिहार राज्य का जिला कैमूर खासकर रामगढ़ क्षेत्र को जल छाजन के क्षेत्र में सुंदर उदाहरण के रूप में लिया जा सकता है। कैमूर के रामगढ़ को आज न केवल बिहार बल्कि भारतवर्ष का सफलत्तम जल छाजन क्षेत्र माना जा रहा है। जहाँ जमीन बंजर थी, वहाँ प्रति हेक्टेयर 50 क्विंटल धान उपज रहा है। इस इलाके के लोग खुद बताते हैं कि यहाँ 20 घंटे रोज बिजली रहती है। यहाँ जो भी समृद्धि आयी है वह पानी और बिजली के रास्ते आयी है। कैमूर जैसी स्थितियाँ सारे राज्य में नहीं है। बिहार के इस जिले में उपाजाऊ धरती है जहाँ सरकार के प्रोत्साहन से उपजाऊ धरती सोना उगा सकती है।